हिन्दी–अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

वर्ष 60 सितम्बर 2018 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता

प्रो० कमल किशोर गोयनका
प्रो० सुरेन्द्र दुबे
प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक

प्रो० नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक

डॉ० नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग

डॉ० निर्मला अग्रवाल
प्रो० मीरा दीक्षित

भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग

हिन्दी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ0 निर्मला अग्रवाल, **प्रबंधमंत्री,** भारतीय हिन्दी परिषद्
हिन्दी–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
Website- www.bhartiyahindiparishad.org
Email-hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : रु0 **50.00**

अक्षर संयोजन : जितेन्द्र कुमार मिश्र, **मो0– 09452365928**
मुद्रक : नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलाहाबाद

13. पत्र साहित्य : आत्मीयता का अनंत विस्तार 114
डॉ0 कृष्णगोपाल मिश्र

14. हिन्दी का डायरी साहित्य : दशा एवं दिशा 120
डॉ0 हरेकृष्ण तिवारी

15. इक्कीसवीं सदी में हिन्दी आलोचना : नई चुनौतियां 128
डॉ0 विनिता चौहान

16. इक्कीसवीं सदी के नाटक एवं रंगमंच : सृजन की चुनौतियां 135
प्रो0 अलका पाण्डेय

17. हिन्दी का डायरी साहित्य और रमेशचंद्र शाह की डायरिया 140
प्रो0 स्मृति शुक्ल

18. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी संस्मरण–विधा : प्रेरक उपलब्धियां 148
डॉ0 कृष्णचन्द्र गोस्वामी

19. राजस्थान का समकालीन कथेतर गद्य 154
डॉ0 नवीन नंदवाना

20. हिन्दी की महिला आत्मकथाओं में नारी जीवन का यथार्थ 163
डॉ0 मुकेश कुमार

21. बेनीपुरी का डायरी साहित्य 168
डॉ0 अर्पणा

22. साहित्यकार की दृष्टि–सृष्टि में डूबती–उतरती विधा साक्षात्कार 173
डॉ0 मीता शर्मा

23. बिसनाथ के बिरकोहर की कथा 182
Sto हरीश कुमार शर्मा

24. कथेतर गद्य विधा : आत्मकथा और जीवनी 187
डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव

25. भोजपुरी कथेतर गद्य साहित्य और डॉ0 विवेकी राय 196
डॉ0 विनम्र सेन सिंह

26. 'पथ के साथी' संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भाषा शैली 203
डॉ0 पुष्पा रानी

27. ललित निबंध परम्परा में कुबेरनाथ राय का अवदान 207
डॉ0 राजेश कुमार

28. हिन्दी भाषा एवं साहित्य को नये आयाम देने में वेब माध्यम 221
डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह

29. आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य : अतीत और वर्तमान 230
डॉ0 अनिल राय

30. हँसो न तारा : विडंबनाओं का अध्ययन 235
डॉ0 कामिनी ओझा

31. परिषद के 44वें अधिवेशन का समाहार वक्तव्य 240
डॉ0 पवन अग्रवाल

आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य . अतीत और वर्तमान

डॉ. अनिल राय

1932 में जब प्रेमचंद ने हंस के आत्मकथा विशेषांक निकालने हेतु आचार्य नंददुलारे वाजपेयी से कुछ लिखने का आग्रह किया तो वाजपेयीजी ने कहा था "आत्मकथा लिखने के योग्य हिंदी में कितने हैं? कितने ऐसे महच्चरित्र हैं, जिनका जीवनवृत्त हिंदी जनता की पथ– नियामिका बनाई जा सकती है? इसके जवाब में प्रेमचंद ने जो कहा वह इस साहित्यिक विधा की दिशा बदल देने में मील का पत्थर साबित हुआ 1 उन्होंने कहा "मेरा ख्याल है कि मेरे घर के मेहतर के जीवन में भी कुछ ऐसे रहस्य हैं, जिनसे हमें प्रकाश मिल सकता है" (आत्मकथा की संस्कृति, पंकज चतुर्वेदी।) आज से लगभग 85-86 वर्ष पहले प्रेमचंद द्वारा कही हुई बात आज अक्षरशः सच साबित हुई है। आज आत्मकथा समाज के हाशिए पर सदियों से पड़े वंचितों उपेक्षितों की आत्माभिव्यक्ति की सर्वाधिक सशक्त साहित्य विधा बन चुकी है। प्रेमचंद ने उपन्यास के भविष्य पर भी विचार करते हुए कहा था "....भावी उपन्यास जीवनचरित होगा। चाहे किसी बड़े आदमी का हो या छोटे का। उसकी छुटाई– बड़ाई का फैसला उन कठिनाइयों से किया जाएगा, जिन पर उसने विजय पाई है" (प्रेमचंद, मेरे सात जनम, भाग 1, हंसराज रहबर)

हिंदी आत्मकथा लेखन की परंपरा में देवराज कृत 'यौवन के पार द्वार' (1970), वृंदावनलाल वर्मा कृत 'अपनी कहानी' (1970), डॉ.रामविलास शर्मा कृत 'घर की बात' (1983), शिवपूजन सहाय कृत 'मेरा जीवन' (1985), रेणु की आत्मकथा 'मेरा परिचय' (1988), रामदरश मिश्र कृत 'सहचर है समय' (1991). प्रतिभा अग्रवाल कृत 'दस्तक जिंदगी की' (1990), भीष्म साहनी कृत 'आज के अतीत' (2003). राजेंद्र यादव कृत 'मुड़ मुड़ कर देखता हूँ' (2001), अखिलेश कृत 'वह जो यथार्थ था' (2003), रामकमल राय कृत 'एक अंतहीन की तलाश'(2007), मृदुला गर्ग कृत 'राजपथ से लोक पथ'(2008), मिथिलेश्वर कृत 'पानी बीच मीन पियासी' (2010), नरेंद्र मोहन कृत 'कम्बख्त निंदर' (2013) आदि कृतियाँ महत्वपूर्ण है I मिथिलेश्वर ने अपनी आत्मकथा के .दो और भाग लिखे 'कहाँ तक कहें युगों की बात' (2011), और 'जाग चेत कुछ करो उपाई' (2015) । 2013 में जोहरा सहगल की आत्मकथा 'करीब से' प्रकाशित हुई है। इसी वर्ष 2018 में प्रसिद्ध शायर मुनव्वर राणा की आत्मकथा ' मीर आकर लौट गया' प्रकाशित हुई है जो एक उत्कृष्ट कोटि की आत्मकथा है।

हिंदी में दलित आत्मकथा के विकास में मोहनदास नैमिशराय का विशेष योगदान रहा है। 1995 में उनकी आत्मकथा 'अपने अपने पिंजरे' प्रकाशित हुई। भारतीय वर्णव्यवस्था की जकड़न में कैद दलितों के जीवन की त्रासदी यहाँ पूरी तरह

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

उभर हुई है। इसके दो वर्ष बाद ओमप्रकाश बाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' 1997 त हुई। इसमें लेखक ने लिखा—– "दलित जीवन की पीड़ा असहनीय और है। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके। एक । जैक व्यवस्था मे हमने सांसें ली हैं, जो बेहद क्रूर और अमानवीय हैं। दलितों असंवेदनशील भी अपनी व्यथा कथा को शब्दबद्ध करने का विचार काफी से मन में था। सभी का आग्रह था मैं अपने अनुभवों को विस्तार से लिखूँ। नुभवों को लिखने मे कई प्रकार के खतरे थे। एक लंबी जद्दोजहद के बाद मैं लसिलेवार लिखना शुरू किया। तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़ना। ो एक बार फिर जीना पड़ा। इस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणा मैंने भोगी। को परत दर परत उधेड़ते हुए कई बार लगा कितना दुखदायी है यह सब...।"

। अभिशाप' कौशल्या बैसन्त्री की आत्मकथा है, जो 1999 में प्रकाशित हुई थी। यह ा दलित समाज में स्त्री संघर्ष का संपूर्ण लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है। एक द स्त्री गुलामी की दोहरी जंजीरों की पीड़ा झेलने के लिए किस प्रकार अभिशप्त ती है, इस रचना में लेखिका ने इसकी पूरी पड़ताल की है। दोहरा अभिशाप बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों से लेकर वर्तमान युग तक के दलित र त के जीवन की क्रमशः बदलती हुई तस्वीरों को स्पष्ट देखा जा सकता है। अन्य सिद्ध दलित आत्मकथाओं में तुलसीराम कृत 'मुर्दहिया' तथा 'मणिकर्णिका', माता प्र कृत 'झोपड़ी से राजभवन'(2002), सूरजपाल चौहान कृत 'संतप्त' आदि का नाम लेखनीय है। 2011 में सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' प्रकाशित . जो साहित्य जगत में काफी चर्चित रही। इस रचना में लेखिका ने तमाम सं ों की यात्रा करते हुए यह स्पष्ट किया है कि स्त्री की सभी प्रकार की पराधीनता से मुक्ति का एक मात्र समाधान है स्त्री शिक्षा। सदियों से तिरस्कृत और अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए अभिशप्त दलित वर्ग की व्यथा–कथा 'शिकंजे का दर्द' में खुलकर व्यक्त हुई है।

समाज और साहित्य में चल रहे स्त्री– विमर्श का प्रभाव हिंदी के आत्मकथा साहित्य पर भी खूब पड़ा है। फ्रांस की सिमोन द बउवार ने 1970 के आसपास स्त्री अधिकारों के लिए जो आवाज उठाई उसकी अनुगूंज भारतीय स्त्री लेखिकाओं में भी साफ सुनाई पड़ी। सिमोन ने भी अपनी आत्मकथा 'ए वेरी ईजी डेथ' नाम से लिखी थी। सिमोन की इस आत्मकथा ने विश्व की तमाम भाषाओं में स्त्री लेखिकाओं को अपनी आत्मकथा लिखने की प्रेरणा दी। आरंभिक दौर में स्त्री लेखन संस्मरण तक ही सीमित रहा। किसी भी स्त्री के लिए आत्मकथा लिखना बड़ा ही चुनौती भरा कार्य था। प्रभा खेतान अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में लिखती हैं–"आत्मकथा एक चीख भी है जो बताती है कि अपने किए हुए और भोगे हुए के लिए सिर्फ हम जिम्मेदार नहीं होते। हमारे पीछे खड़ा सारा समाज इस जिन्दगी का साक्षी और सहभोक्ता ही नहीं इसकी हालत के लिए उत्तरदायी व्यूह–रचना 'का निर्माता भी वह है......"। समाज की इस व्यूह–रचना से आज का स्त्री–समाज सचेत हो रहा है, जिसकी परिणति हिंदी में स्त्री आत्मकथाओं का विकास है।

ISSN : 2249-930X

पिछले दो–तीन दशकों में स्त्री लेखिकाओं द्वारा जो आत्मकथाएँ लिखी गई हैं उनमें प्रतिभा अग्रवाल कृत 'दस्तक जिंदगी की'(1990),कुसुम अंसल कृत 'जो कहा नहीं गया' (1996), कृष्णा अग्निहोत्री कृत 'लगता नहीं है दिल मेरा' (1997), पद्मा सचदेव कृत 'बूंद बावड़ी' (1999) मैत्रेयी पुष्पा कृत 'कस्तूरी कुंडलि बसै' (2002), रमणिका गुप्त कृत 'हादसे' (2005), प्रभा खेतान कृत अन्या से अनन्या' (2007), मनु भंडारी कृत 'एक कहानी यह भी' (2007), मैत्रेयी पुष्पा कृत 'गुड़िया भीतर गुड़िया' (2008), चंद्रकिरण सौनरेक्सा कृत 'पिंजरे की मैना' (2008) कृष्णा अग्निहोत्री कृत 'औरत और.., औरत' (2010), निर्मला जैन कृत 'जमाने में हम' रमणिका गुप्त कृत 'आपहुदरी' (2015) आदि रचनाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

2008 में राजेंद्र यादव के संपादन में 'देहरि भई विदेस' नामक किताब प्रकाश में आई थी । इस आत्मकथात्मक रचना में बीस लेखिकाओं के आत्मकथ्य संकलित हैं। यह पुस्तक दस्तावेज, आत्मकथांश और आत्मकथ्य तीन शीर्षकों में विभक्त है। इसकी भूमिका में राजेंद्र यादव ने स्त्री आत्मकथा पर विचार करते हुए लिखा है– "औरत की हर आत्मकथा अपनी यात्राओं की ऐसी दास्तान है जो घर–घर में घटित होती है। मर्दों की आत्मकथाएँ अपने निजी संघर्षों की विजयगाथाएँ हैं। स्त्री की आत्मकथा समाज और परिवार के भीतरी सच्चाइयों से साक्षात्कार है, जिनकी चुभन जूते की कील की तरह पहनने वाला ही जानता है। आत्मकथाओं में व्यक्त स्त्री–पीड़ा का उद्घाटन करती हुई लेखिका मैत्रेयी पुष्पा अपनी आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में लिखती हैं–"यह आत्मकथा उन मंजरों को खोलेगी, जिनमें मुझे शारीरिक रूप से बेईज्जती और मानसिक प्रताड़ना दी गई। यही साक्षी बनेगी कि मैंने स्त्री का जीवन संघर्ष संपूर्ण रूप में खोलकर क्यों किताब के पन्नों पर फैला दिया। बस इसलिए कि पुरुषों ने मुझे जैसी जिंदगी दी थी उसके चलते लाज शर्म के पर्दे फट गए। तन के साथ मन भी चिथड़ा चिथड़ा।" रमणिका गुप्त की आत्मकथा दो खंडों में प्रकाशित हुई है पहला खंड 'हादसे' 2005 में, तथा दूसरा खंड 'आपहुदरी' 2015 में। हादसे समाज की बहुस्तरीय रूढ़ियों को तोड़ने वाली एक विद्रोही स्त्री की आत्मकथा बनकर उभरी है। आपहुदरी अपने कथ्य और शिल्प दोनों ही धरातलों पर पारंपरिक आत्मकथा से थोड़ी अलग है 1 यहाँ लेखिका के राजनीतिक व्यक्तित्व की विकास–यात्रा अधिक मुखर हुई है। इस रचना में जहाँ सामयिक इतिहास और विभाजन का दर्द बयां हुआ है, वहीं एक संघर्षशील साहसी और जिद्दी लड़की की संघर्षगाथा भी व्यक्त हुई है।

साहित्य में आत्मकथन को आत्मकथा और परकथा को जीवनी कहा जाता है। जीवनी सामान्यतः किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन पर केंद्रित होती है। किसी व्यक्ति के जीवनवृत्त की कलात्मक और साहित्यिक ढंग से प्रस्तुति जीवनी होती है। लेखक की स्थिति बदल जाने से जीवनी और आत्मकथा के गद्य का मिजाज भी बदल जाता है। जीवनी–लेखक आदर और सम्मान की मुद्रा में आगे बढ़ता है, जबकि आत्मकथा–लेखक का गद्य औपचारिकता और आत्मीयता के साथ साथ चलता है। जीवनचरित या जीवनी के प्राचीनतम रूप किसी भी देश और समाज के धार्मिक, पौराणिक, आख्यान और दंतकथाओं में देखे जा सकते हैं। भारतीय संदर्भ में बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्षवर्धन का जीवनचरित्र प्राचीन जीवनीयों में से एक है। मध्यकाल में

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

कवि भूषण द्वारा लिखित 'शिवराज भूषण' को जीवनी की श्रेणी में रखा जा सकता है। नाभादास की रचना 'भक्तमाल' तथा गोकुलद।f। की 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' व 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' को जीवनी–साहित्य के विकास की आरंभिक कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। वल्लभ संप्रदाय से संबंधित यह वार्ता–साहित्य बोली गई गद्यभाषा में लिखा गया है I अनुमान किया जाता है कि ये वार्ताएँ 1535 से 1587 ई. के बीच मौखिक रूप में अवश्य उपलब्ध रही होंगी।

जीवनी लेखन के लिए जिस प्रकार की मनःस्थिति होनी चाहिए हिंदी साहित्यकारों में वह कम ही दिखाई पड़ती है। आत्मकथाकार के लिए जहाँ खुले मन का होना जरूरी होता है, जिससे वह अपनी शक्तियों तथा उपलब्धियों के साथ न्यूनताओं और विफलताओं को भी उद्घाटित कर सके। जीवनीकार के लिए चरितनायक के विषय में संपूर्ण ज्ञान का होना नितांत आवश्यक है। चरित नायक के लिए श्रद्धा या प्रशंसा का भाव एक सशक्त जीवनी–लेखन में अवरोध पैदा करता है। इस भाव के वशीभूत जीवनीकार चरितनायक की कमियों और दुर्बलताओं की उपेक्षा कर देते हैं जो कि नहीं होना चाहिए। जीवनीकार और चरित नायक के q।रस्परिक संबंध भी इसी प्रकार के भाव से युक्त होते हैं। पिता–पुत्र, पति–पत्नी, गुरु–शिष्य आदि के संबंध इसी श्रेणी में आते हैं।

आधुनिक संतों और महात्माओं में सबसे अधिक जीवनियाँ स्वामी दयानंद सरस्वती की लिखी गई हैं। महात्मा गाँधी पर लिखी जीवनियों की भी भरमार सी है। नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, लालबहादुर शास्त्री आदि पर भी अनेक जीवनियाँ लिखी गई हैं। जहाँ तक विदेशी महापुरुषों का प्रश्न है, उनकी जीवनी भी हिंदी में कम नहीं हैं।

हिंदी में साहित्यकारों पर लिखी जीवनियाँ बहुत अधिक नहीं है। राधाकृष्ण दास द्वारा 1904 में लिखित 'भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवन चरित्र', आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित 'बाबू राधाकृष्ण दास'(1913), रामविलास शर्मा कृत 'निराला की साहित्य साधना' (1969), विष्णु प्रभाकर द्वारा शरतचंद्र पर लिखित जीवनी 'आवारा मसीहा' (1974), शिवसागर मिश्र द्वारा लिखित 'दिनकर एक सहज पुरुष' (1981), शोभाकांत मिश्र द्वारा लिखित 'मेरे बाबूजी नागार्जुन' आदि महत्वपूर्ण जीवनियाँ हैं। हिंदी में अकेले प्रेमचंद पर तीन जीवनियाँ लिखी जा चुकी हैं। पहली जीवनी 'प्रेमचंद घर में' उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 1944 में लिखी थी। दूसरी उन्हीं के पुत्र अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' 1962 में, तथा तीसरी मदन गोपाल ने 1964 में 'कलम का मजदूर' शीर्षक से लिखी। कहने की आवश्यकता नहीं है कि तीनों ही उत्कृष्ट कोटि की रचनाएँ हैं। •

पिछले दो दशकों में जो जीवनी साहित्य हिंदी में सृजित हुआ है उसमें डॉ. तेज बहादुर चौधरी द्वारा लिखित शमशेर की जीवनी 'मेरे बड़े भाई' (1995), राहुल सांकृत्यायन की पत्नी कमला सांकृत्यायन द्वारा 1995 में लिखित 'महामानव महापंडित', पत्नी द्वारा बेटी को पत्र–शैली में सुलोचना रांगेय राघव द्वारा लिखित 'रांगेय राघव एक अंतरंग परिचय' (1997), महिमा मेहता द्वारा लिखित 'उत्सवपुरुष नरेश मेहता' (2003), गायत्री कमलेश्वर द्वारा लिखित 'मेरे हमसफर'(2005), विजयबहादुर सिंह द्वारा लिखित 'आलोचक का संदेश'(2008), विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखित हजारीप्रसाद

ISSN : 2249-930X

द्विवेदी की जीवनी 'व्योमकेश दरवेश' (2011), आदि प्रसिद्ध एवं चर्चित कृतियाँ' हैं। इधर 2017 में प्रभाष जोशी की जीवनी **'लोक का प्रभाष'** रमाशंकर कुशवाहा ने **लिखी** है 12018 में पंडित जसराज की जीवनी प्रकाशित हुई **है, जिसकी लेखिका सुनीता** बुद्धिरhill हैं I

सहायक एवं संदर्भ ग्रंथ--

1. Design And Truth In Autobiography, Roy Poseal
2. . **आत्मकथा की संस्कृति**, पंकज चतुर्वेदी।
3. **दलित आत्मकथाओं** की अंतरव्यथा, मोहनदास **नैमिशराय।**
4. . जूठन, **ओमप्रकाश वाल्मीकि.**
5. . **अन्या से** अनन्या, **प्रभा** खेतान।
6. देहरी भई विदेश, राजेंद्र **यादव।**
7. **गुड़िया भीतर गुड़िया, मैत्रेयी पुष्पा।**
8. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी I
9. **हिंदी साहित्य कोश, सं. धीरेंद्र वर्मा।**
10. **मेरे सात जनम, भाग** 1, **हंसराज रहबर।**

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी **विभाग**
श्यामलाल कॉलेज (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय
दूरभाष 9810379859